International Journal of Information Movement Vol.2 Issue I (May 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 46-51

# महादेवी वर्मा का काव्य और गीति–सौष्ठव

**डॉ. शालू**
पीएच.डी. (हिन्दी),
सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

हिन्दी की छायावादी काव्य–धारा के आधार–स्तम्भों में 'प्रसुमनि' (प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी, निराला) कवियों का विशेष योगदान रहा है। महादेवी के काव्य में एक साथ गीति, प्रणय, वेदना, दुःख, करुणा, रहस्यवाद, छायावाद, सर्वात्मवाद इत्यादि के दर्शन किये जा सकते हैं। छायावाद की सम्यक् पहचान इनके काव्य में हो जाती है। आचार्य विनय मोहन शर्मा ने महादेवी की विशिष्टता दर्शाते हुए कहा है– 'छायावाद ने यदि महादेवी को जन्म दिया तो महादेवी ने छायावाद को प्राण दिये।' कविवर पंत ने महादेवी वर्मा को एक सशक्त कवयित्री स्वीकार किया है– 'महादेवी जी की छायावादियों में एकमात्र वह चिरंतन भाव–यौवना कवयित्री है, जिन्होंने नये युग के परिप्रेक्ष्य में राग तत्त्व के गूढ़ संवेदन तथा राग मूल्य को अधिक मर्मस्पर्शी, गंभीर, अन्तर्मुखी, तीव्र संवेदनात्मक अभिव्यक्ति दी है।' डॉ. कामिल बुल्के का कथन है– "भारतीय स्वाभिमान जितना सच्चा और स्वाभाविक है, उतना ही विवेकपूर्ण और प्रगतिशील भी है। नवीन विचारों को अपनी प्रखर बुद्धि की कसौटी पर कसना, खरे उतरने पर उन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य साँचे में डालना तथा निर्भीकतापूर्वक अपनाना, इस क्षमता में महादेवी जी के शक्तिशाली व्यक्तित्व का अनिवार्य गुण मानता हूँ।"

महादेवी ने ब्रजभाषा में लिखना बचपन से आरंभ कर दिया था। ग्यारह वर्ष की आयु में इन्होंने खड़ी बोली में भी रचनाएँ लिखना प्रारंभ कर दिया था। 'सरस्वती' पत्रिका की प्रेरणा से इन्होंने खड़ीबोली में रचनाएँ लिखना प्रारंभ कर दिया था। इसके अतिरिक्त 'चाँद', 'महिला जगत', 'आर्य महिला' इत्यादि पत्रिकाओं में भी इनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं। साहित्य क्षेत्र में महादेवी कवयित्री एवं गद्य लेखिका के रूप में अपना पृथक् अस्तित्व रखती हैं। दुःख एवं वेदना की भावाभिक्ति में महादेवी के समक्ष कोई नहीं उतरता। इन्होंने नारी–हृदय की प्रस्तुति सहज और स्वाभाविक रूप में की है। उनके गीतिकाव्य में समष्टिभाव सन्निविष्ट है। इनकी रचनाओं में सामाजिक भावनाओं का चित्रण वैयक्तिक अनुभूति के माध्यम से हुआ है।

महादेवी वर्मा ने गीति–काव्यों का विपुल मात्रा में सृजन किया है। उनके गीति–काव्य के कई संकलन प्रकाशित हो चुके हैं– 'नीहार' (1930), 'रश्मि' (1932), 'नीरजा' (1935), 'सांध्यगीत' (1936), 'दीपशिखा' (1942), 'सप्तपर्णा' (1960), 'संधिनी' (1965), 'परिक्रमा' (1974)। महादेवी के गीतों में अनुभूति, भावना एवं कल्पना की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है। ये गीतियाँ न तो दार्शनिकता के बोझ से बोझिल हैं और न बौद्धिकता से आक्रांत हैं। इनके काव्य में करुणा की अविरल धारा बह रही है। इनके गीति काव्य में सामवेद–सा मधुर गान भरा हुआ है, जयदेव की सी कोमल भावना भरी हुई है, विद्यापति की सी मधुर कल्पना विद्यमान है और मीरा की सी आत्मानुभूति विराजमान है।[1]

महादेवी की गीतियों में मानवीय कोमल भावनाओं की मधुर अभिव्यक्ति हुई है। उनके काव्य में विरह की मूल वेदना एवं प्रेम की मूक पीड़ा अत्यंत मार्मिकता के साथ अभिव्यक्त हुई है। महादेवी की गीतियों में स्वाभाविकता, सरसता, रोचकता, रागात्मकता, प्रतीकात्मकता सर्वत्र मौजूद हैं। उनकी गीतियाँ अनुभूति की तीव्रता व आत्मनिवेदन के आलौकिक रस से परिपूर्ण हैं। डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार, "उनकी गीतियाँ सुकुमारता, स्वाभाविकता, सरसता, संगीतात्मकता, अनुपम मधुरता, असह्य पीड़ा की मूकता, शिल्पगत कलात्मकता के कारण गीतिकाव्य के क्षेत्र में सर्वोपरि हैं।"[2]

प्रसिद्ध समालोचक हडसन का विचार है कि रीति–काव्य वैयक्तिकता प्रधान होता है और उसमें व्यक्ति–वैचित्य की अपेक्षा मानव अनुभूतियों एवं भावनाओं की ऐसी अभिव्यकित होती है, जिसमें प्रत्येक पाठक रसानुभूति प्राप्त कर सकता है।[3]

एफ.टी. पालग्रेह्व का मत है कि गीति–काव्य में किसी एक ही विचार, भाव या स्थिति के प्रकाशन पर बल दिया जाता है और उसमें किसी एक ही मनोभाव, विचार या अवस्था की संक्षिप्त, किन्तु अखण्ड मनोवेगपूर्ण अभिव्यंजना होती है।[4] 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' के अनुसार गीति–काव्य वह है जिसमें विशुद्ध कलात्मक धरातल पर कवि के अन्तर्मुखी जीवन का उद्घाटन मुख्यतया होता है और जो उसके हर्ष–उल्लास, सुख–दुःख एवं विषाद को वाणी प्रदान करता है।[5] भारतीय विचारकों में डॉ. श्यामसुंदर दास ने गीति–काव्य को आत्माभिव्यंजना सम्बन्धी कविता कहा है और बताया है कि गीति–काव्य के छोटे–छोटे गेय पदों में मधुर भावनापन्न स्वाभाविक आत्म निवेदन रहता है, इन पदों में शब्द की साधना के साथ–साथ संगीत के स्वरों की उत्कृष्ट साधना रहती है।[6] आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गीति–काव्य की विशिष्टता की ओर संकेत करते हुए बताया है कि गीति–काव्य उस नई कविता का नाम है, जिसमें प्रकृत्ति के साधारण–असाधारण सब रूपों पर प्रेम–दृष्टि डालकर, उसके रहस्य भरे सच्चे संकेतों को परखकर, भाषा को अधिक चित्रमय, सजीव और मार्मिक रूप देकर कविता का जो एक अकृत्रिम, स्वच्छंद मार्ग निकाला गया है। यह सर्वाधिक अन्तर्भाव व्यंजक होता है।[7] आचार्य गुलाबराय के मतानुसार गीतिकाव्य में निजीपन के साथ रागात्मकता रहती है और यह रागात्मकता भाव की एकता एवं संक्षिप्तता के साथ संगीत की मधुर लय में व्यक्त होती है। इसीलिए संगीत यदि गीति–काव्य का शरीर है तो भावातिरेक उसकी आत्मा है।[8] कविवर जयशंकर प्रसाद की दृष्टि में गीतिकाव्य में आभ्यन्तर सूक्ष्म भावों की प्रधानता रहती है और ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान, उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विकृति भी होती हे।[9] महादेवी वर्मा के विचारानुसार सुख–दुःख की भावावेशमयी अवस्था विशेष का गिने–चुने शब्दों में स्वर–साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है।[10] डॉ. दशरथ ओझा के मतानुसार– "जिस काव्य में एक तथ्य या एक भाव के साथ–साथ एक ही निवेदन, एक ही रस, एक ही परिपाटी हो, वह गीति–काव्य है।"[11]

## महादेवी वर्मा के गीति–काव्यों का वैशिष्ट्य :

उक्त विद्वानों के मतों का अनुशीलन करने पर ज्ञात होता है कि गीति–काव्य उस आत्माभिव्यंजक कविता को कहते हैं, जिसमें आंतरिक मनोभावों की लघु आकार में संगीतमयी

सुकुमार अभिव्यक्ति होती है। इस विश्लेषण के आधार पर महादेवी वर्मा के गीति–काव्य की निम्नलिखित विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं–

## आत्माभिव्यंजकता :

'आत्माभिव्यंजकता' से तात्पर्य है–वैयक्तिक सुख–दुःखात्मक अनुभूति की अभिव्यंजना। महादेवी वर्मा के गीतिकाव्य में स्वच्छंद मनोवृत्ति का परिज्ञान होता है। कवयित्री ने अपने निजी जीवन और जगत् से उपलब्ध सुख–दुःख, हर्ष–शोक, करुणा–आनंद, हास–रुदन की अभिव्यक्ति की है। वस्तुतः कवयित्री का हृदय संचित अनुभूतियों का भण्डार है। जब ये अनुभूतियाँ उद्वेलित एवं विचलित करने लगती हैं, तब उसके हृदय से मनोभावों की सरिता फूट निकलती है, तब गीति–काव्य की अभिव्यक्ति होती है। कवयित्री का हृदय वैयक्तिक सुख–दुःखात्मक अनुभूतियों का भंडार है। निम्न पंक्तियों में कवयित्री की आत्माभिव्यंजकता द्रष्टव्य है–

विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करुणा में मिला आवास है।
अश्रु चुनता इसका अश्रु गिनती रात,
जीवन विरह का जलजात।
आँसुओं का कोष उर, दृग अश्रु की टकसाल,
सरल जल–कण से बने घन–सा क्षणिक मृदु गात।
विरह का जलजात।

## रागात्मकता :

रागात्मकता से तात्पर्य है–गेयता या संगीतात्मकता। स्वयं महादेवी वर्मा के अनुसार –"साधारणतया गीत व्यक्तिगत सीमा में तीव्र सुख–दुखात्मक अनुभूति का वह शब्द–रूप है जो अपनी ध्वन्यात्मकता में गेय हो सके।" अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ के अनुसार 'Poetry is apontaneous over flow of powerful emotions' अर्थात् काव्य सहज भावों का उच्छलन है। महादेवी जी के गीति–काव्य में यह रागात्मकता अत्यधिक मात्रा में विद्यमान है, क्योंकि उनकी गीतियों को सुनते ही सहसा श्रोता के हृदय पर जादू का सा असर पड़ता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

चुभते ही मेरा अरुण बान।
बहते कन–कन से फूट–फूट, मधु के निर्झर से सजल गान।
इन कनक रश्मियों में अथाह, लेता हिलोर तम–सिंधु जाग।
उद्बुध से बह चलते अपार, उसमें विहंगों के मधुर राग।।
दे मृदु कवियों की चटक, ताल, हिम–बिंदु नचाती तरल प्राण।
धो स्वर्ण–प्रात में तिमिर गात, दुहराते अलि निशि मूक तान।।

उक्त प्रगीत में लोकगीतों की लय का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। महादेवी के गीतों की गेयता का विश्लेषण करते हुए डॉ. नगेन्द्र लिखते हैं– 'स्वर तंत्रियों में गुम्फित कोमल शब्दावली रेशम पर मोती की भाँति ढुलकाती जाती है।'

## काल्पनिकता :

काल्पनिकता से तात्पर्य है– कल्पना तत्त्व द्वारा रमणीय अर्थ की सृष्टि। 'कल्पना' को मन की तरंग कहा गया है।[12] कवयित्री ने ऐसे नूतन अनुभूति–चित्रों का निर्माण किया है, जो सर्वदा विचित्र दिखाई देते हैं। कवयित्री अपने गीतों में ऐसे अनुभूतिपरक मार्मिक चित्र अंकित करती हैं, जो अपनी सजीवता, सरसता एवं सुकुमारता के कारण काल्पनिक होकर भी वास्तविक जान पड़ते हैं। कविता की कतिपय पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

बीन भी हूँ, मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ।
प्रथम जागृति भी जगत के प्रथम स्पंदन में,
प्रलय में मेरा पता पद–चिह्न जीवन में,
नयन में जिसके जलद वह तृषिक चातक हूँ।
शलभ जिसके प्राण में यह, निठुर दीपक हूँ,
फूल को उर में छिपाये विकल बुलबुल हूँ।
एक होकर दूर तन से, छाँव वह चल हूँ,
दूर तुमसे हूँ, अखंड सुहागिनी भी हूँ।

## संगीतात्मकता :

संगीत गीति–काव्य का मूलाधार है, क्योंकि बिना संगीत के वह आगे नहीं बढ़ता, बिना संगीत के उसके पद नहीं चलते और बिना संगीत के उसका निर्माण नहीं होता। डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना के अनुसार, "संगीत की मधुर स्वर लहरियों पर चढ़कर ही उनके चरण थिरकते हैं, संगीत ही उसमें प्राण–चेतना का संचार करता है, संगीत ही उसमें अखंड रस धारा प्रवाहित करता है, संगीत ही उसे भाव–मुखर बनाता है, संगीत ही उसकी गहन अनुभूतियों को जमाता है और संगीत के विशिष्ट आरोह–अवरोह ही उसके मार्मिक उद्गारों को अभिव्यंजना प्रदान करते हैं।[13] वस्तुतः महादेवी का गीति–काव्य संगीत का अक्षय भंडार है। उनके सम्पूर्ण गीति–काव्य में संगीत की सुमधुर सरिता प्रवाहित हो रही है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

दिया क्यों जीवन का वरदान।
इसमें है स्मृतियों का कंपन, सुप्त व्यथाओं का उन्मीलन,
स्वप्नलोक की परियाँ इसमें, भूल गईं मुस्कान।
इसमे है झंझा का शैशव, अनुरंजित कलियों का वैभव,
मलय पवन इसमें भर जाता, मृदु लहरों के गान।।

## भावगत एकता :

गीतिकाव्य में प्रायः एक ही भाव आदि से अंत तक विद्यमान रहता है। अन्य साहित्यिक विधाओं में विविध भावों का संयोजन होता है, जबकि गीति–काव्य एक ही भाव को लेकर चलता है और वह भाव अखंड रूप से उस गीति की सीमा में विद्यमान रहता है। महादेवी के काव्य में यही विशेषता (भावगत एकता) सर्वत्र दिखाई देती है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

तुम असीम विस्तार ज्योति के, मैं तारक सुकुमार।
तेरी रेखा रूप हीनता है, जिसमें साकार।।
मैं तुमसे हूँ एक, एक है जैसे रश्मि प्रकाश।

मैं तुमसे हूँ भिन्न, भिन्न ज्यों घन से तड़ित विलास।।

## आकारगत लघुता :

आकारगत लघुता से तात्पर्य है– किसी एक भाव या रस का निरुपण। खंडकाव्य, एकार्थ काव्य, महाकाव्य में आकार की दीर्घता रहती है, जबकि गीतिकाव्य में लघु आकार के अन्तर्गत मार्मिक भाव की अभिव्यक्ति होती है। महादेवी के गीति–काव्य आकारगत लघुता में अत्यंत मार्मिक, मनोरंजन एवं प्रभावोत्पादक हैं। यथा–

क्या पूजा क्या अर्चन रे ?
उस असीम का सुंदर मंदिर मेरा लघुतम जीवर रे।
मेरी श्वासें करती रहतीं नित प्रिय का अभिनंदन रे।
पद रज को धोने उमड़े आते लोचन में जलकन रे।

## शैलीगत सुकुमारता :

शैलीगत सुकुमारता से तात्पर्य है–कोमलकांत पदावली का प्रयोग। "कवयित्री के गीति–काव्य के प्रत्येक चरण में कोमल एवं सुकुमार शब्द विन्यास होता है और जिसका प्रत्येक पद सानुस्वार एवं सुकोमल वर्णों की ललित वाक्यावली से परिपूर्ण होता है।"[14] कवयित्री के काव्य में पद लालित्य के साथ–साथ स्वर–माधुर्य एवं नाद सौन्दर्य विद्यमान है। यथा–

वे मुस्काते फूल, नहीं जिनको आता है मुरझाना,
वे तारों के दीप, नहीं जिनको आता है बुझ जाना।
वे सूने से नयन, नहीं जिनमें बनते आँसू मोती,
वे प्राणों की सेज, नहीं जिसमें बेसुध पीड़ा सोती।

वस्तुतः महादेवी की कविता गीति–काव्य की सम्पूर्ण विशेषताओं से ओतप्रोत है। उसमें आत्माभिव्यक्ति, आत्मानुभूति, निश्छल हृदय के उद्‌गार हैं। उद्वेलित मन की स्वछंद भाव तरंगें हैं। उनके गीतिकाव्य में सहज संगीतात्मकता है। उसका सम्पूर्ण काव्य कोमलकांत पदावली से युक्त है। महादेवी का सम्पूर्ण काव्य सर्वाधिक प्रभावोत्पादक, सर्वाधिक मनोभावाभिव्यंजक है और सर्वाधिक मनोरंजक है। इसी कारण महादेवी आधुनिक युग की सर्वोत्कृष्ट गीति–लेखिका हैं। आधुनिक गीतिकारों में महादेवी का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

## संदर्भ

1. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, पृ. 314
2. वही, पृ. 315
3. An introduction to the study of literature, P. 127
4. Golden Treasurry, P. 9
5. Encyclopeadia Britanica, Vol. XVII, P. 181
6. साहित्यालोचन, पृ. 115–116
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. 650
8. सिद्धान्त और अध्ययन, पृ. 107
9. काव्य और कला तथा अन्य निबंध, पृ. 123
10. सांध्यगीत, अपनी बात, पृ. 4
11. समीक्षा–शास्त्र, पृ. 83

12. साहित्यालोचन, पृ. 255
13. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, पृ. 320
14. वही, पृ. 323